सूखा

कारण, सूखे के प्रकार, सूखे का प्रभाव (समस्याएँ), शमन और प्रबंधन

सूखा भी एक चरम स्थिति है, जो अधिक समय तक वर्षा की अपर्याप्तता के कारण फसलों को नुकसान पहुंचाती है। विभिन्न देशों और क्षेत्रों में सूखे की परिभाषा देश के औसत वर्षा स्तर के आधार पर अलग-अलग होती है जैसे कि देश या क्षेत्र आमतौर पर कम वार्षिक औसत वर्षा प्राप्त करते हैं, वर्ष भर उच्च वर्षा प्राप्त करने वाले देश वर्षा के बिना 5 से 6 दिन तक नहीं मानते हैं क्योंकि सूखे जैसी स्थिति को सूखे की स्थिति कहा जाता है।

सूखा और इसके कारण

यदि बाढ़ की वजह से सूखे की तुलना में पानी की अधिकता के कारण बाढ़ आती है और सूखापन और कृषि उत्पादन की कमी के कारण सूखे की स्थिति पैदा होती है। सूखे के प्रमुख कारण हैं:

वर्षा का अभाव: जब वर्षा का स्तर सामान्य औसत से लगभग 75% कम होता है, तो लंबे समय तक सूखा पड़ता है। वर्षा और सिंचाई सुविधाओं की कमी के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होने पर सूखे की स्थिति अधिक प्रचलित है।

सतही जल के प्रवाह में कमी: जब नदियों और नदियों जैसे सतही जल निकायों का प्रवाह कम हो जाता है या नदियाँ सूख जाती हैं तो जल विद्युत संयंत्रों और सिंचाई सुविधाओं के लिए बाँधों / जलाशयों में पानी के भंडारण के कारण सूखे जैसी स्थिति हो जाती है नदी के बहाव क्षेत्र में कमी आ जाती है।

वनों की कटाई: पौधों और पेड़ों द्वारा पृथ्वी के जल विज्ञान चक्र (वाष्पीकरण, वर्षा और संक्षेपण सहित) को बनाए रखा जाता है। पेड़ों में जल धारण क्षमता है, वाष्पीकरण को नियंत्रित कर सकता है और भूजल स्तर को बनाए रख सकता है। अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि और विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के कारण वनों की कटाई ने सतह को क्षरण और भूजल के स्तर को कम कर दिया है और पृथ्वी की सतह के पानी को धारण करने की क्षमता कम हो गई है, जिसके परिणामस्वरूप लंबे समय तक सूखापन, मरुस्थलीकरण और सूखा संकट दिखाई देता है।

ग्लोबल वार्मिंग: ग्रीनहाउस गैसों में वृद्धि के कारण वैश्विक तापमान में वृद्धि ने जलवायु को बहुत प्रभावित किया है परिणामस्वरूप कई क्षेत्र सूख जाते हैं और वन कैच आग की तरह मरुस्थलीकरण और सूखे जैसी स्थिति में ले जाते हैं।

सूखे के प्रकार

सूखे की स्थिति को कृषि, मौसम विज्ञान, जल विज्ञान और सामाजिक आर्थिक सूखे के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। सूखे की स्थिति सरकारी एजेंसियों, अधिकारियों और नगरपालिकाओं के लिए एक राहत योजना विकसित करने और प्रभावित जनता को संबंधित सहायता प्रदान करने के लिए संकेतक के रूप में कार्य करती है।

कृषि सूखा: यह सूखे की स्थिति देश की अर्थव्यवस्था पर भारी प्रभाव डालती है। कृषि सूखे से किसान बुरी तरह प्रभावित होते हैं जब मिट्टी की नमी कम हो जाती है और फसल उत्पादन के लिए पानी की मांग फसल की वृद्धि को प्रभावित करती है। फसल वृद्धि और उत्पादन में गिरावट अंततः खाद्य आपूर्ति और अर्थव्यवस्था को बाधित करती है। कृषि सूखा की स्थिति तब होती है जब कम वर्षा के साथ गर्म और शुष्क मौसम के कारण मिट्टी की नमी कम हो जाती है, जिससे कृषि उत्पादन की कमी होती है।

हाइड्रोलॉजिकल सूखा: यह एक सूखा स्थिति है जहां बांधों, झीलों, जलाशयों, नदियों आदि सहित सभी सतही जल निकायों के जल स्तर में एक स्थापित मानक से नीचे आता है। यहां तक कि जब पानी की मांग या उपयोग भंडार में पानी की आपूर्ति या उपलब्धता से अधिक होता है, तो जल-संबंधी सूखा होता है।

मौसम संबंधी सूखा: यह सूखा स्थिति प्राकृतिक कारकों जैसे वर्षा के निचले स्तर, वातावरण में नमी की कमी, अधिक समय तक सूखापन और उच्च तापमान के कारण होती है। मौसम संबंधी सूखा यदि लंबे समय तक बना रहता है तो गंभीर जल संकट और इससे संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। यह सूखा एक छोटी अवधि से लंबी अवधि तक फैल सकता है।

सूखे का प्रभाव (समस्याएँ)

सूखे के प्रभाव को सूखा प्रभावित क्षेत्रों की भौतिक सीमा से परे महसूस किया जा सकता है। चूंकि सूखे की स्थिति पानी की कमी से जुड़ी है, इसलिए यह न केवल समाज बल्कि अर्थव्यवस्था और पर्यावरण को भी प्रभावित करता है।

सूखे का आर्थिक प्रभाव: वस्तुओं और सेवा के उत्पादन के लिए पानी की आवश्यकता होती है, इस प्रकार इसका अभाव लोगों, व्यापार और सरकारों को प्रभावित करता है। कृषि और संबंधित क्षेत्र के लिए पानी प्रमुख कारक है, फसल उत्पादन काफी हद तक पानी की आपूर्ति पर निर्भर करता है, और इसलिए इसकी कमी से फसलों और पशुधन दोनों का उत्पादन बाधित होता है। किसान या फ़सल उत्पादक कम फसल उत्पादन का सीधा लाभ उठाते हैं जिसका अर्थ है लाभ मार्जिन और आय का प्रत्यक्ष नुकसान। मुख्य रूप से किसान की आय का नुकसान उनके सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। कम उत्पादन और खाद्य आपूर्ति की अधिक मांग से मूल वस्तुओं की कीमत बढ़ सकती है, जिसका सीधा असर खरीदारों पर पड़ता है विशेषकर निम्न आय वर्ग पर। इसके अलावा, बुनियादी वस्तुओं की कमी के मामले में, चीजों को आयात किया जा सकता है, फिर से सरकार को खर्च करना होगा। यदि व्यापार में सूखे की स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है जैसे कि अधिकांश विनिर्माण उद्योग, कृषि उत्पाद उद्योग, और जल मनोरंजन व्यवसाय पानी पर निर्भर करता है, तो इसकी कमी व्यवसाय को प्रभावित क्षेत्रों में ऑपरेशन को रोकने के लिए मजबूर कर सकती है। इस प्रकार कई लोग बेरोजगार हो सकते हैं। इसके अलावा, सूखे की स्थिति और संबद्ध सूखापन भी हवा के कटाव और विभिन्न बीमारियों और महामारियों के जन्म की संभावना को बढ़ाता है, जो व्यक्तियों, समुदाय और बड़े पैमाने पर राष्ट्र को खर्च करता है। कम वर्षा, उच्च तापमान और सूखापन से जंगल की आग की संभावना बढ़ जाती है, जो पशु और मानव दोनों के निवास स्थान को नुकसान पहुंचाती है। जंगल की आग और पौधों और अन्य वनस्पतियों को नुकसान जनता और सरकार दोनों पर पड़ता है। इसके अलावा, पानी की कमी या नदियों की तरह सतह के पानी की सूखापन जल विद्युत उत्पादन के साथ-साथ जलमार्ग के माध्यम से परिवहन को प्रभावित कर सकती है।

सामाजिक प्रभाव: सूखे का लोगों और समाज पर सीधा प्रभाव पड़ता है और कई अप्रत्यक्ष दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। खाना पकाने, खाने, नहाने और सफाई सहित हमारी बुनियादी दैनिक गतिविधियों के लिए हमें पानी की आवश्यकता होती है, इस प्रकार इसकी कमी या इसके अभाव का सीधा असर हमारे जीवन पर पड़ सकता है। पानी का हमारे स्वास्थ्य से भी सीधा संबंध है, हमें पीने और खाना पकाने के लिए साफ और ताजा पानी की आवश्यकता होती है। प्रदूषित और बासी पानी गंभीर स्वास्थ्य प्रभाव पैदा कर सकता है और पूरे समाज में बीमारियां फैला सकता है। पानी की आपूर्ति की कमी के कारण कृषि और लाइव स्टॉक का उत्पादन खाद्य उत्पादन में कमी का कारण बनता है। जब आपूर्ति कम होती है तो समाज के गरीब लोगों पर सबसे ज्यादा असर

पड़ता है। पौधों के उचित पानी के बिना भोजन की गुणवत्ता भी कम हो जाती है और इसी प्रकार भोजन के पोषण मूल्य भी कम हो जाते हैं। यह निम्न गुणवत्ता वाली खाद्य आपूर्ति मानव और पशु दोनों के स्वास्थ्य को प्रभावित करती है और उन्हें बीमारियों और स्वास्थ्य के मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाती है। यदि सूखे की स्थिति बनी रहती है तो लोग अपनी संपत्ति और अपने परिवारों को छोड़कर अन्य स्थानों पर पलायन करना पसंद करते हैं। कृषि सूखे के मामले में कई किसानों को अपने खेतों को छोड़कर अन्य क्षेत्रों या कस्बों में विषम नौकरियां करनी पड़ती हैं। पानी, इसकी आपूर्ति और कमी ने राष्ट्रों, राज्यों और पड़ोसी लोगों के बीच कई विवादों को जन्म दिया है। उदाहरण के लिए, भारत में पानी को लेकर राज्यों के बीच विवाद बहुत असामान्य नहीं है जैसे कि कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच कावेरी नदी जल विवाद, दिल्ली, यूपी और हरियाणा के बीच यमुना जल उपयोग के मुद्दे आदि ये विवाद सामाजिक अशांति का कारण बनते हैं।

पर्यावरणीय प्रभाव: सूखे जैसे हालात पर्यावरण पर भारी प्रभाव डालते हैं। यदि नदियों, नालों और अन्य जल निकायों को वर्षा के माध्यम से ताजे पानी की आपूर्ति नहीं मिलती है या बर्फ पिघलने से ऐसे जलीय निकायों का पारिस्थितिकी तंत्र काफी प्रभावित हो सकता है। पानी की आपूर्ति में कमी के कारण कई जल जनित जीव और जानवर मर जाते हैं। झीलों, तालाबों और नदियों को, जो ताजे बारिश के पानी से फिर से भर जाते हैं, भले ही लंबे समय तक रहने से पहले की कमी हो। उच्च तापमान और सूखापन के कारण मिट्टी का कटाव कम जैविक उत्पादन और भूमि क्षरण के लिए अग्रणी शीर्ष मिट्टी को हटा सकता है। कई जानवर और जीव अपने विलुप्त होने की धमकी देते हुए अपना निवास स्थान खो देते हैं।

सूखा से शमन और प्रबंधन

सूखा एक प्राकृतिक खतरा है जिसे घटना से रोका नहीं जा सकता है, लेकिन उचित योजना के साथ इसके प्रभावों को कम से कम किया जा सकता है। सूखे की स्थिति विकसित होने में समय लगता है इसलिए सूखे की तबाही के जोखिम को कम करने के लिए एहतियाती कदम उठाए जा सकते हैं। भविष्यवाणियाँ, अवलोकन, प्रभाव विश्लेषण और प्रतिक्रिया सूखे की तैयारी के चार प्रमुख घटक हैं। सुदूर संवेदी डेटा, उपग्रह इमैजरीज, विंड सर्कुलेशन इत्यादि के आधार पर आसन्न जलवायु परिस्थितियों और अवक्षेपों के बारे में भविष्यवाणियां और बादल आंदोलनों की उचित निगरानी, पानी की उपलब्धता और फसल की स्थिति सूखे की तैयारी के आवश्यक कदम हैं। सूखे के प्रभाव के विश्लेषण में फसल की गुणवत्ता, मानव स्वास्थ्य, राज्य की अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी तंत्र का अध्ययन शामिल है। सूखे की प्रतिक्रिया में प्रभावित लोगों को राहत प्रदान करना, सभी को जल भंडारण की सुविधा, जल और मिट्टी संरक्षण, अधिक

वनस्पति और उचित योजना शामिल है। सूखे जैसी स्थितियों को रोकने के लिए कुछ प्रमुख कदम निम्नलिखित हैं:

1. शिक्षा और जागरूकता: लोगों को शिक्षित किया जाना चाहिए और सूखे के कारणों और प्रभावों के बारे में पहले से सूचित किया जाना चाहिए। समुदाय के नेताओं, गैर सरकारी संगठनों, स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी अधिकारियों आदि को आम जनता को सूखे के दुष्प्रभावों के बारे में शिक्षित करने और इसे कम करने के लिए कदम उठाने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। समस्या के बारे में ज्ञान से जनता को अपना समाधान बनाने में मदद मिल सकती है। शासी प्राधिकरण के लोगों को जलवायु परिस्थितियों और क्षेत्रीय परिदृश्यों के बारे में भी ज्ञान प्राप्त करना चाहिए ताकि सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाएं उन्हें आश्चर्यचकित न करें और ऐसी किसी भी अवांछित स्थिति से निपटने के लिए नीतियों को पहले से अच्छी तरह से परिभाषित किया जा सके।

2. प्रदूषण नियंत्रण: वर्षा और मौसम संबंधी सूखे की स्थिति के माध्यम से प्राकृतिक जल आपूर्ति की कमी के मामले में, लोग स्वच्छ जल के लिए उपलब्ध जल संसाधनों जैसे नदियों, झीलों, तालाबों आदि पर निर्भर करते हैं। हालाँकि, यदि ये सतही जल या भूजल संसाधन प्रदूषित हैं तो समस्या बढ़ जाती है। इसलिए, सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सतह और भूजल स्रोत प्रदूषित न हों। यहां तक कि लोगों को सूखे की समस्याओं और स्वच्छ जल के रखरखाव और प्रदूषण पर नियंत्रण की आवश्यकता के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए।

3. जल और मृदा संरक्षण: जल संरक्षण और मृदा संरक्षण उपाय सूखे के विनाशकारी प्रभावों को सीमित करने में मदद कर सकते हैं। वर्षा जल संचयन, सतही अपवाह जल संग्रह, परावरण तालाब, जल उपयोग की उचित योजना, बांध और जलाशय निर्माण और अच्छी तरह से और जल चैनलों के उचित प्रबंधन जैसे जल संरक्षण के तरीके मौसम संबंधी सूखे की स्थिति के प्रभाव को सीमित करते हैं। इसी प्रकार मृदा संरक्षण के तरीकों के माध्यम से मिट्टी की नमी को बनाए रखा जा सकता है और सूखे की अवधि में मिट्टी के कटाव को भी नियंत्रित किया जा सकता है। फसल के रोटेशन, छत की खेती आदि जैसे तरीकों से मिट्टी के कटाव को नियंत्रित किया जा सकता है और मिट्टी की नमी को बनाए रखा जा सकता है, जैसे कि फर, बेसिन, लकीरें, गड्ढों को पकड़ना आदि, यहां तक कि परिदृश्य जहां अपवाह जल को सीधे पौधों के क्षेत्रों में फैलाया जा सकता है। मिट्टी की नमी को बढ़ाने में।

ये उल्लिखित कदम सूखे की स्थिति और इसके विनाशकारी प्रभावों को नियंत्रित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि सूखे और बाढ़ की समस्याएं न केवल प्रकृति का निर्माण हैं, बल्कि मानवीय हस्तक्षेप इन प्राकृतिक आपदाओं के विनाशकारी प्रभाव को बढ़ाते हैं। इसलिए, इन समस्याओं को नियंत्रित करने के उपाय भी मानव के पास हैं। कुप्रथाओं पर नियंत्रण करके प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कई प्राकृतिक आपदाओं को रोक सकता है। प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा सार्वजनिक जागरूकता और सक्रिय पहल बाढ़ और सूखे की संबद्ध समस्याओं के प्रभाव को कम कर सकती है।

भूगोल

महत्वपूर्ण लिंक

- मिट्टियों का वर्गीकरण, वितरण एवं विशेषताएँ (Classification, distribution and characteristics of soils)
- ज्वालामुखी का मानव-जीवन पर प्रभाव- निर्माणकारी प्रभाव तथा विनाशकारी प्रभाव
- ज्वालामुखी का अर्थ और परिभाषा- उद्गार के कारण तथा ज्वालामुखी का विश्व वितरण
- Watershed Management - Concept, Approaches, Principles, Demarcation of Watershed Area, Watershed Management in India
- Contributions of Arab Geographers - Historical Background, Prominent Arab Scholars, Contribution to different branches of Geography
- शहरीय परिवहन- परिवहन और स्थान, परिवहन प्रणाली का महत्व एवं विकास, शहरीय परिवहन की समस्याएँ एवं समाधान
- शहरी बाढ़- कारण, श्रेणियाँ, खतरा, शहरी बाढ़ प्रबंधन (आपदा के दौरान और बाद में)
- द सेक्टर थ्योरी: होयट (1939) (The Sector Theory: Hoyt (1939))
- द मल्टीपल न्यूक्ली थ्योरी: हैरिस और उलमैन (The Multiple Nuclei Theory: Harris and Ullman (1945))
- द कन्सेन्ट्रिक जोन मॉडल: ई.डबल्यू.बर्गेस (1923) (The Concentric Zone Model: E.W. Burgess (1923))
- अनुप्रयुक्त जलवायु विज्ञान (Applied Climatology)- परिभाषा, अर्थ और महत्व, डेटा के स्रोत, जलवायु और प्राकृतिक प्रणाली, जलवायु और सामाजिक व्यवस्था, जलवायु और स्वास्थ्य, सारांश और निष्कर्ष
- प्राकृतिक आपदाएँ (Geomorphic Hazards)- भूकंप, सुनामी, भूस्खलन, हिमस्खलन
- हिमस्खलन- हिमस्खलन के प्रकार, एवलानचेस के कारक, हिमस्खलन आपदा, जोखिम में कमी
- भूस्खलन- भूस्खलन के प्रकार, भूस्खलन के कारण, भूस्खलन आपदा, जोखिम में कमी के उपाय
- सुनामी- सुनामी के कारण, खतरे, सुनामी का प्रसार एवं तंत्र, जोखिम में कमी
- Sources of Groundwater- Connate water, Meteoric water, Juvenile water, Condensational water
- भूकंप- भूकंप के कारण, भूकंपों का वैश्विक वितरण, भूकंप के खतरे, भूकंप की भविष्यवाणी और जोखिम में कमी
- Sources of Groundwater- Connate water, Meteoric water, Juvenile water, Condensational water
- Environmental Pollution- Definitions, Pollutant, Classification of pollutants, Types of Pollution
- Flood- Causes of Flood, Types of Floods, Impacts (Problems) of Flooding, Precautionary Steps before Flood, Steps to be taken during and post flood, Flood Preventive Measures
- Drought and its Causes, Types of Droughts, Impact (Problems) of Drought, Drought Mitigation and Management
- आपदा और आपदा प्रबंधन- आपदा प्रबंधन चक्र, भारत में आपदा प्रबंधन का इतिहास, भारत में आपदा प्रबंधन में शामिल एजेंसियां
- सूखा- कारण, सूखे के प्रकार, सूखे का प्रभाव (समस्याएँ), शमन और प्रबंधन

- बाढ़- बाढ़ का कारण, क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा, बाढ़ के प्रभाव (समस्याएँ), बाढ़ से पहले के एहतियाती कदम, बाढ़ के दौरान और बाद में उठाए जाने वाले कदम, बाढ़ निवारक उपाय
- प्रमुख पर्यावरण नीतियां और कार्यक्रम – गंगा एक्शन प्लान, टाइगर प्रोजेक्ट, ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल, पर्यावरणीय कानून
- मृदा क्षरण - प्रभावित करने वाले कारक, अपरदन के प्रकार, कटाव का प्रभाव, रोकथाम
- पर्यावरणीय आंदोलन – संकल्पना, आंदोलनों की उत्पत्ति, उद्भव के प्रमुख आधार, भारत में मुख्य पर्यावरणीय आंदोलन
- नर्मदा बचाओ आंदोलन 1985 - वर्ष, स्थान, लीडर्स, उद्देश्य तथा सम्पूर्ण जानकारी
- मिट्टी के कटाव को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक
- मृदा अपरदन का प्रभाव - मृदा अपरदन के प्रभावों में शामिल हैं.....
- साइलेंट वैली मूवमेंट - वर्ष, स्थान, लीडर्स, उद्देश्य तथा सम्पूर्ण जानकारी
- जल प्रदूषण- स्रोत, प्रभाव, रोकने के लिए नियंत्रण के उपाय
- विकिरण (रेडिएशन) प्रदूषण- प्रभाव, निवारक तथा उपाय
- ध्वनि प्रदूषण- स्रोत, प्रभाव, निवारक तथा उपाय
- थर्मल प्रदूषण- थर्मल प्रदूषण ऊर्जा अपव्यय के माध्यम से ठंडा पानी में अपशिष्ट .....
- भूमि प्रदूषण- स्रोत, कारण, रोकने के लिए नियंत्रण के उपाय
- पर्यावरण प्रदूषण- परिभाषाएँ, प्रदूषक, प्रदूषकों का वर्गीकरण, प्रदूषण के प्रकार, निष्कर्ष
- वायु प्रदूषण- स्रोत, प्रभाव, वायु प्रदूषण के लिए नियंत्रण
- वायु दाब- प्रभावित करने वाले कारक,दबाव और पवन के बीच संबंध, दबाव बेल्ट में मौसमी बदलाव
- वायु दबाव- वायु दबाव बेल्ट का वितरण
- वायुमंडलीय दबाव को प्रभावित करने वाले कारक (तापमान, ऊंचाई, जल वाष्प, गुरुत्वाकर्षण बल, पृथ्वी का घूर्णन)
- अंडमान सागर से जुड़े सम्पूर्ण तथ्य एवं जानकारी
- बंगाल की खाड़ी से संबन्धित तथ्य एवं समुद्री जीवन
- अरब सागर, अरब सागर की विशेषताएं, उल्लेखनीय खाड़ी
- भारतीय महासागर- हिंद महासागर (क्षेत्रीय विस्तार, गहराई और मात्रा, खड़ियाँ और समुद्र, व्यापार मार्ग, लवणता, तल की रूपरेखा, समुद्री जीव, द्वीप)
- भूमि उपयोग - भूमि कवर, भूमि संसाधन, भूमि संसाधन का महत्व, मूल संबंध: भूमि, जनसंख्या और प्रबंधन रणनीति, भारत में लैंडयूज / लैंडकवर
- संसाधन भूगोल के सिद्धांत – परिभाषा, NEO-CLASSICAL थ्योरी, गतिशीलता के सिद्धांत
- संसाधन भूगोल की अवधारणा – परिचय, विश्वसनीय अवधारणा, सामग्री अवधारणा
- जल संसाधन भूगोल एवं जल संसाधन भूगोल की विषय वस्तु
- मानव संसाधन और मानव संसाधन के अध्ययन के तीन पहलू
- संसाधन भूगोल के प्रकार - प्राकृतिक संसाधन, मानव संसाधन
- प्राकृतिक संसाधन- प्राकृतिक संसाधनों के प्रकार
- संसाधनों का उपयोग एवं संसाधन भूगोल की प्रासंगिकता
- संसाधन भूगोल का परिचय | संसाधन भूगोल की वृद्धि | विशेषताएं | संसाधन का अर्थ | प्राकृतिक संसाधन अभिशाप सिद्धांत (ब्रिज, 2000)
- मानचित्र का अर्थ एवं परिभाषाएं (MEANING AND DEFINITION OF MAP)
- मानचित्र का अर्थ एवं मानचित्रों का महत्व (MEANING OF MAP AND IMPORTANCE OF MAPS)
- मानचित्रों का वर्गीकरण (CLASSIFICATION OF MAPS) मानचित्र के प्रकार
- मृदा नमी को प्रभावित करने वाले कारक(Factors Affecting Soil Moisture)
- मृदा नमी संरक्षण (Soil Moisture Conservation)
- भूमिगत जल को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Underground Water)
- भूमिगत जल के स्रोत (Sources of Ground Water)
- वाष्पोत्सर्जन को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Transpiration)
- मृदा नमी की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of Soil Moisture)
- जलीय चक्र पर मानव का प्रभाव (Man's Influence on Hydrological Cycle)

- वाष्पीकरण को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Evaporation)
- वाष्पीकरण नियन्त्रण (Evaporation Control)
- वाष्पोत्सर्जन का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Transpiration)
- जल विज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning And Definition of Hydrology)
- जल विज्ञान का विषय क्षेत्र (Scope of Hydrology)
- भारतीय जलवायु की प्रमुख विशेषताएँ (SALIENT FEATURES)
- जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Climate)
- जलवायु परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन के कारण, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु वैश्विक प्रयास
- पारिस्थितिक तंत्र पर मानव का प्रभाव
- प्राकृतिक संसाधन (Natural resource)
- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण
- चट्टानों के प्रकार - आग्नेय चट्टानें, अवसादी चट्टानें, रुपांतरित चट्टानें
- मनुष्य का विकास (Human evolution)
- जेट प्रवाह (Jet Streams)
- जनसंख्या वृद्धि रोकने के उपाय (EFFORTS TO CHECK POPULATION GROWTH)
- वनों के लाभ (Advantages of Forests)
- श्वेत क्रान्ति (White Revolution)
- द्वितीय हरित क्रांति
- हरित क्रान्ति की सफलता के लिए सुझाव (SUGGESTIONS FOR THE SUCCESS OF GREEN REVOLUTION)
- हरित क्रांति के दोष अथवा समस्याएं (Demerits or Problems of Green Revolution)
- हरित क्रान्ति की उपलब्धियां एवं विशेषताएं
- हरित क्रान्ति (Green Revolution)
- शहरीय परिवहन | यातायात में व्यवधान सिद्धांत | परिवहन की समस्याएं एवं समाधान
- तकनीकी आपदा Technical Hazard
- ओजोन क्षरण Ozone layer degradation
- Soil Resource Degradation (Soil Erosion)
- मानव विकास Human Development in hindi
- गैर पारंपरिक ऊर्जा के स्रोत (non conventional energy resources)
- संज्ञानात्मक नक्शा, मानसिक नक्शा या मानसिक मॉडल Cognitive Map
- गतिक संतुलन संकल्पना Dynamic Equilibrium concept
- पारंपरिक एवं लोक ग्रामीण अधिवास के प्रकार Traditional and folk rural house types
- रैवेनस्टीन का प्रवास नियम (Ravenstein – The laws of migration)
- भारतीय गृह की प्रादेशिक विशेषताएँ [Regional morphological characteristics of Indian village]
- नगरीय क्षेत्रीय माडल [Urban realms model]
- बाई लुंड का सिद्धांत [Bylund (Sweden) settlement diffusion theory]
- भूमण्डलीय ऊष्मन(Global Warming)|भूमंडलीय ऊष्मन द्वारा उत्पन्न समस्याएँ|भूमंडलीय ऊष्मन के कारक
- मानव अधिवास तंत्र [Human settlement as a system]
- बाढ़ आपदा परिभाषा तथा अर्थ,बाढ़ के प्रकार,बाढ़ के कारण,बाढ़ आपदा का प्रबन्धन,
- भूमंडलीकरण (वैश्वीकरण) विशेषताएँ,वैश्वीकरण के लाभ,पक्ष तथा विपक्ष में तर्क
- भारत में वनों का वर्गीकरण - भौगोलिक आधार पर वर्गीकरण
- वनों का राष्ट्र के आर्थिक विकास में महत्व - वनों से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ
- जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारक
- जनसंख्या के घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक तथा जनसंख्या घनत्व का अर्थ
- आग्नेय चट्टान | आग्नेय चट्टानों की विशेषताएँ | आग्नेय चट्टानों का वर्गीकरण | आग्नेय चट्टानों का आर्थिक उपयोग (लाभ)

- अवसादी या परतदार चट्टानें | अवसादी चट्टानों की विशेषताएँ | अवसादी चट्टानों का वर्गीकरण | अवसादी चट्टानों का आर्थिक उपयोग (लाभ)
- कायान्तरित या रूपान्तरित चट्टानें | रूप-परिवर्तन के कारण | कायान्तरित चट्टानों की विशेषताएँ | कायान्तरित चट्टानों का आर्थिक उपयोग (लाभ)
- शैल या चट्टान क्या है | चट्टानों का वर्गीकरण (प्रकार) | चट्टानों का आर्थिक महत्त्व
- सौरमंडल (Solar System) | सौरमंडल के ग्रह | सौरमंडल से संबन्धित सम्पूर्ण जानकारी
- नगरीय अधिवास की विशेषताएँ | नगरों का कार्यों के अनुसार वर्गीकरण | नगरों में सुविधाएँ (गुण) | नगरों की समस्याएँ (दोष)
- Contribution of banaras school in Geography | Contribution of R.L. singh, Kashi nath singh, rana p.b singh
- WORLD GEOGRAPHY Objective Book | Applicable For All Competitive Exams | free pdf download
- यूनानी भूगोलवेत्ता (Greek Geographers in hindi)
- प्राचीन भारत के भूगोलवेत्ता (Geographers of Ancient India in hindi)
- रोमन भूगोलवेत्ता (Roman Geographers in hindi)
- अरब भूगोलवेत्ता (Arab Geographers in hindi)
- पुनर्जागरण काल के भूगोलवेत्ता (Geographers of Renaissance Period in hindi)
- पुनर्जागरण काल के प्रमुख खोजयात्री (Main Explorers of Renaissance Period in hindi)
- 18 वीं शताब्दी के जर्मन भूगोलवेत्ता (German geographers of 18th century)
- अलेक्जेण्डर वॉन हम्बोल्ट – आधुनिक भूगोल का जनक (Alexander Von Humboldt)
- कार्ल रिटर – आधुनिक भूगोल का संस्थापक (Carl Ritter Founder of modern geography)
- फ्रेडरिक रैटजेल - मानव भूगोल का जनक (Friedrich Ratzel - father of human geography)
- फर्डीनण्ड वॉन रिचथोफेन – जर्मन भूगोलवेदत्ता (Ferdinand Von Richthofen)
- अल्फ्रेड हेटनर – जर्मन भूगोलवेत्ता (Alfred Hettner - German geographer)
- वाइडल डी ला ब्लाश - फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता (Vidal de la Blache – French Gerographer)
- जीन ब्रूंश – फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता (Jean Brunhes – French Geographer)
- अल्बर्ट डिमांजियाँ - फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता (Albert Demangeon - French Geographer)
- इमैनुअल डी मार्तोन –फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता (Emmanuel De Martonne – French Geographer)
- ए० जे० हरबर्टसन – ब्रिटिश भूगोलवेत्ता (A. J. Herbertson – British Geographer)
- हाफोर्ड जॉन मैकिण्डर – ब्रिटिश भुगोलवेत्ता (Halford John Mackinder – British Geographers)
- पैट्रिक गेडिस – ब्रिटिश भुगोलावेत्ता (Patric Geddes – British Geographers)
- हरबर्ट जॉन फ्ल्यूर - ब्रिटिश भुगोलावेत्ता (Herbert John Fleure – British Geographers)
- लारेन्स डडले स्टाम्प - ब्रिटिश भुगोलावेत्ता (L. D. Stamp – British Geographers)
- विलियम मॉरिस डेविस - अमेरिकी भूगोलवेत्ता (William Morris Davis – American geographer)
- एलेन चर्चिल सेम्पल- अमेरिकी भूगोलवेत्ता (Ellen Churchill Semple - American geographer)
- एल्सवर्थ हंटिंगटन – अमेरिकी भूगोलवेत्ता (Ellsworth Huntington – American geographer)
- ईसा बोमैन – अमेरिकी भूगोलवेत्ता (Isaiah Bowman – American geographer)
- ग्रिफिथ टेलर -अमेरिकी भूगोलवेत्ता (Griffith Taylor -American geographer)
- कार्ल ऑस्कर सावर - अमेरिकी भूगोलवेत्ता (Carl O. Sauer – American geographer)
- रिचर्ड हार्टशोर्न – अमेरिकी भुगोलवेत्ता (Rechard Hartshorne – American geographer)

sarkariguider.com